आंग्ल-जापानी संधि (1912)

1902 से इंगलैण्ड तथा जापान के बीच एक संधि हुई। इस संधि की दो मुख्य विशेषताएं थीं। पहली, यह पहला अवसर था जब एक यूरोपीय देश ने एशिया के किसी देश के साथ समानता के स्तर पर संधि की। और दूसरी, इस संधि ने स्पष्ट कर दिया कि ब्रिटेन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अपनी पार्थक्व की नीति का परित्याग कर रहा है। इस संधि के दूरगामी प्रभाव हुए। इसने एशिया और यूरोप की कूटनीतिक स्थिति में महान् परिवर्तन आया।

संधि के कारण–इंगलैण्ड की पृथकता की नीति का अन्तः 1815 ई. से इंगलैण्ड पृथकता की नीति का पालन कर रहा था। अर्थात् 19वीं सदी के अंत तक इंगलैण्ड विश्व राजनीति में घटने वाली किसी भी घटना के प्रति उदासीन रहता था बशर्ते कि उसके हितों को कोई हानि न पहुंचती हो। 19वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में पूर्वी एशिया में रूस का खतरा निरन्तर बढ़ता जा रहा था। इससे ब्रिटेन के पूर्वी साम्राज्य की सुरक्षा को खतरा हो गया। अतः ब्रिटेन के लिए रूस के प्रसार का रोकना बहुत जरूरी था। उसे इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए अपने आपको अकेला असमर्थ पाकर उसे किसी अन्य शक्ति की तलाश करनी पड़ी। उसने सर्वप्रथम जर्मनी के साथ समझौते की बात की। लेकिन जर्मनी ने रूस के विरुद्ध ब्रिटेन से कोई समझौता करने से इन्कार कर दिया। अब यूरोप में केवल फ्रांस ही ऐसी शक्ति थी जिससे संधि करके ब्रिटेन को अपने उद्देश्य में सफलता मिल सकती थी। लेकिन ब्रिटेन और फ्रांस के

Scanned with CamScanner

सम्बन्ध इतने खराब थे कि ब्रिटेन का फ्रांस के साथ कोई समझौता होना असम्भव था। संयुक्त राज्य अमेरिका इस समय अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में तटस्था की नीति को अपना रहा था। अतः उससे भी ब्रिटेन का समझौता होना सम्भव नहीं था। इस दशा में ब्रिटेन की दृष्टि एशिया महाद्वीप की शक्ति पर पड़ी। चीन की प्रतिष्ठा को जापान 1894-95 ई. के युद्ध में मिट्टी में मिला चुका था। अब केवल जापान ही एक ऐसा देश था जिसके साथ ब्रिटेन को समझौता करने के बाद अपने उद्देश्य में सफलता मिल सकती थी।

रूस का खतराः सुदूरपूर्व में रूस की प्रसारवादी नीति से इंगलैण्ड और जापान दोनो क्षुब्ध थे। मंचूरिया, मंगोलिया और तुर्किस्तान में रूस काफी आगे बढ़ चुका था। इंगलैण्ड रूस का एशिया में दक्षिण की ओर विस्तार अपने एशियाई साम्राज्य के लिए संकटपूर्ण मानता था। जापान चीन पर अपना अधिकार जमाना चाहता था। पर रूस उसकी महत्त्वाकांक्षा पर अपनी प्रसारवादी नीति से अंकुश लगा रहा था। शुरू में इंगलैण्ड ने एशिया में रूसी खतरे को कम करने के उद्देश्य से जर्मनी की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया। पर जर्मनी ने इंगलैण्ड की मित्रता को विशेष महत्त्व नहीं दिया। उसे अब एक नये मित्र की आवश्यकता थी जो उत्तरी चीन में रूस के बढ़ते हुए प्रभाव को नष्ट करने में उसकी सहायता करता। ऐसा देश केवल जापान ही हो सकता था। 1895 में चीन के विरुद्ध अपनी महान् सफलता के द्वारा जापान ने अपनी बढ़ती हुई शक्ति का परिचय दे दिया था। अपनी प्रतिष्ठा और गौरव में वृद्धि के लिए जापान को भी इंगलैण्ड जैसे प्रतिष्ठित देश की मित्रता की आवश्यकता थी। रूसी खतरे ने दोनों को आमने-सामने लाकर खड़ा कर दिया।

जापान की आकांक्षाः जापान चीन पर अपना अधिकार स्थापित करने का इच्छुक था। किन्तु रूस का प्रसार मंगोलिया, मंचूरिया तथा तुर्किस्तान में उसके लिए बड़ी रुकावट थी। जापान ने प्रथम चीन-जापान युद्ध में चीन को हराकर उसे शिमोनोसोकी संधि की शर्तें स्वीकार करने पर बाध्य कर दिया था। इस संधि द्वारा जापान को चीन से अनेक लाभ मिले। उस समय चीन में लूट मची हुई थी। प्रत्येक पश्चिमी देश चीन में अधिक से अधिक सुविधाएं प्राप्त करने का प्रयास कर रहा था। परन्तु शिमोनोसोकी की संधि की शर्तों से उनकी इस महत्वाकांक्षा को आघात पहुंच रहा था। वे ही देश जिन पर रूस तथा जर्मनी अपना प्रभाव जमाना चाहते थे, जापान को इस संधि से मिल रहे थे। रूस और जर्मनी को यह सहन न हो सका; अतः रूस, जर्मनी तथा फ्रांस तीनों ने, जापान

Scanned with CamScanner

की शक्ति को सीमित करने के लिए, जापान पर शिमोनोसोकी की संधि में संशोधन करने के लिए दबाव डाला। इसके फलस्वरूप जापान को लियाओतुंग प्रदेश पर अपने अधिकार को त्यागना पड़ा। जापान अकेला इतना अधिक शक्तिशाली नहीं था कि वह तीन यूरोपीय शक्तियों का सामना कर लेता। अत: अपनी विवशता से जापान को बहुत हानि उठानी पड़ी। जब उसके मन में इन तीनों देशों से उनके हस्तक्षेप का बदला लेने के अवसर की खोज उत्पन्न हो गई। अब उसे किसी साथी की तलाश थी जो उसकी सहायता करता।

जापान तथा ब्रिटेन का एक-दूसरे के निकट आना: जापान की शक्ति विस्तार से ब्रिटेन इस कारण से प्रसन्न था कि भविष्य में वह पूर्वी एशिया में रूस के प्रसार को रोकने में उसका सहयोगी बन सकता है। अत: 1894-95 ई. के चीन-जापान युद्ध में ब्रिटेन को हमदर्दी जापान के प्रति थी। इसी के फलस्वरूप जब तीन यूरोपीय देशों—रूस, जर्मन तथा फ्रांस ने शिमोनोसोकी की संधि में संशोधन करने के लिए जापान पर दबाव डालने के लिए ब्रिटेन का सहयोग प्राप्त करना चाहा तो ब्रिटेन ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। जापान ब्रिटेन की इस नीति से बड़ा प्रसन्न हुआ। इसके अतिरिक्त, ब्रिटेन पहला देश था जिसने जापान में प्राप्त अपने समस्त विशेषाधिकारों का परित्याग कर दिया। ऐसा करके केवल ब्रिटेन ने ही जापान को एक शक्तिशाली देश होने की मान्यता प्रदान कर दी और उसके साथ समानता का व्यवहार करने लगा। इस प्रकार जापान और इंगलैण्ड के सम्बन्ध काफी मैत्रीपूर्ण हो गये।

जापान ने ब्रिटेन के साथ समझौता करने की बातचीत की। सात माह तक यह प्रयास चलता रहा। अंत में दोनों देशों के बीच एक समझौता हो गया, जो **आंग्ल-जापानी समझौते** के नाम से विख्यात हुआ। 30 जनवरी, 1902 ई. को यह समझौता ब्रिटेन के लार्ड लैन्सडाउन में इस समझौते पर हस्ताक्षर किये।

समझौता की शर्तें: 1902 ई. में आंग्ल-जापान की संधि हुई। इस संधि का प्रमुख उद्देश्य पूर्वी एशिया में रूस के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकना था। इस संधि की प्रमुख धाराएं निम्नलिखित थीं—

(क) सुदूर-पूर्व में शान्ति की स्थापना और यथास्थिति (Status Quo) को बनाये रखने का निश्चय किया।

(ख) चीन और कोरिया की स्वतंत्रता तथा प्रादेशिक अखण्डता और सारे देशों के लिए व्यापार और व्यवसाय के लिए समान अवसर व सुविधाओं का मिलना।

Scanned with CamScanner

(ग) ब्रिटेन के स्वार्थ मुख्य चीन में और जापान के स्वार्थ चीन और कोरिया में सुरक्षित रहेंगे।

(घ) दोनों देश अपने स्वार्थों की रक्षा के लिए आवश्यक कदम उठा सकेंगे।

(ङ) यदि कोई देश अपने स्वार्थों की रक्षा में लड़ाई में फंस जाय तो दूसरा देश तटस्थ रहेगा और इस बात की देखभाल करेगा कि दूसरे देश को किसी अन्य देश की सहायता तो नहीं मिल रही है। यदि विपक्षी को किसी अन्य देश की सहायता मिली तो दूसरा देश अपने मित्र की सहायता के लिए युद्धक्षेत्र में कूद पड़ेगा।

(च) इस मैत्री की अवधि पांच वर्ष होगी; लेकिन दोनों देशों की सहमति से इस अवधि को बढ़ाया भी जा सकता है।

आंग्ल-जापानी समझौता का प्रभाव एवं महत्व

आंग्ल-जापान समझौते का मुख्य उद्देश्य रूस की प्रगति अथवा प्रसार को रोकना था। ऐसा करने से ही जापान तथा ब्रिटेन के पूर्वी एशिया में हितों की रक्षा हो सकती थी। इस समझौते का अर्थ यह था कि दोनों मित्र देश राजनीतिक क्षेत्र में एक-दूसरे का साथ देंगे जिससे पूर्वी एशिया में रूस का निरन्तर बढ़ता हुआ प्रसार रुक जाय। यदि कूटनीतिक उपाय से इस उद्देश्य में सफलता न मिली तो जापान रूस से युद्ध करके प्रसारवाद को रोकेगा। युद्ध की स्थिति में इंगलैंड का कार्य यह होगा कि वह ऐसा प्रयास करे कि रूस को कोई अन्य यूरोपीय देश सहायता न दे और यदि रूस को किसी दूसरे देश की सहायता मिल जाती है तो ब्रिटेन अपनी पूरी शक्ति से जापान की सहायता करेगा। इस प्रकार इंगलैंड ने इस संधि द्वारा "रूसी भालू" के सुदूर पूर्व में प्रसारवाद को रोकने के लिए "जापानी बौने" के हाथ मजबूत कर दिये और इस प्रकार हांगकांग, मलाया प्रायद्वीप, बर्मा तथा भारत में भी अपने राजनीतिक और व्यापारिक हितों की रक्षा की।" अर्थात इस समझौते को अपने उद्देश्य की प्राप्ति में पूरी सफलता मिली।

रूस और फ्रांस पर इसका प्रभावः इस समझौते से रूस तथा फ्रांस दोनों भयभीत हो गये। रूस को यह आभास हो गया कि यदि उसने पूर्वी एशिया में आक्रामक नीति का अनुसरण किया तो उसका जापान के साथ युद्ध हो जायेगा और जापान को एक शक्तिशाली यूरोपीय देश की मदद मिल जायेगी। अतः रूस

Scanned with CamScanner

ने अपना प्रयास कुछ दिनों के लिए रोक दिया अर्थात् रूस का पूर्वी एशिया में प्रसार कुछ दिनों के लिए रुक गया।

जापान की प्रतिष्ठा में वृद्धिः इस संधि से पहले यूरोपीय देश एशियायी देशों को हीन दृष्टि से देखा करते थे। परन्तु इंगलैंड जैसे शक्तिशाली यूरोपीय देश के साथ जापान जैसे बौने एशियाई देश के बीच संधि होने से विश्व की कूटनीतिक धारणा में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आ गया। अब जापान विश्व में एक प्रथम श्रेणी का देश माना जाने लगा। यही नहीं, उसकी साम्राज्यवादी नीति को भी मान्यता मिल गई। अब जापान को यूरोपीय देश के समान समानता स्तर प्राप्त हो गया। जापान को अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में वह स्थान प्राप्त हो गया जो अब तक किसी भी एशियायी देश को प्राप्त नहीं हुआ था। इसका तत्कालीन प्रभाव यह हुआ कि जापान अब यूरोपीय देशों का सामना करने के लिए तैयारी करने लगा। इससे जापान के साम्राज्यवाद के आधार को शक्ति मिली।

यूरोपीय राजनीति पर प्रभावः इस समझौते से यूरोपीय देशों को खुला संकेत मिल गया कि अब इंगलैंड ने पृथकता की नीति को त्याग दिया है। अब वह अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपना गुट बनाने का प्रयत्न कर रहा है। दूसरे, यूरोपीय देश यह अनुभव करने लगे कि अब रूस और जापान में युद्ध अनिवार्य है और उस युद्ध में इंगलैंड जापान की सहायता करेगा। फ्रांस यद्यपि रूस के साथ था, परन्तु वह भी युद्ध नहीं चाहता था। अंत में 1904 ई. में उसने ब्रिटेन के साथ संधि कर ली। अब रूस अकेला रह गया।

1904-05 ई. के रूस-जापान युद्ध का जनकः इस समझौते ने रूस-जापान युद्ध को जन्म दिया। रूस ने तो पूर्वी एशिया में अपना प्रसार कुछ समय के लिए रोक दिया था, लेकिन जापान ने ब्रिटेन के समर्थन का लाभ उठाकर रूस के प्रति उग्रवादी नीति को अंगीकार किया। फलतः रूस तथा जापान दोनों के बीच युद्ध आरम्भ हो गया।

विश्व राजनीति के इतिहास में आंग्ल-जापानी समझौते का एक असाधारण और अति महत्वपूर्ण स्थान है। इस समझौते ने जापान के प्रसारवाद को ठोस आधार दिया तथा रूस की प्रसारवादी नीति पर अंकुश लगा दिया। यह समझौता 20वीं सदी का पहला कूटनीतिक क्रांति का प्रतीक माना जाता है।[2]

संधि का अंतः प्रारम्भ में यह संधि पांच वर्षों के लिए की गयी थी। 1905ई. में पुनः इस संधि का नवीनीकरण किया गया। इस अवसर पर संधि के परिवेश का और भी विस्तार कर दिया गया। किन्तु, अब भी यह शर्त बनी रही

Scanned with CamScanner

कि चीन की शान्ति तथा अखण्डता को कायम रखा जाएगा तथा चीन में खुले दरवाजे की नीति को मान्यता दी जाएगी। 1905 में जापान तथा इंगलैंड दोनों की सुविधाओं और हितों को ध्यान में रखकर इस संधि के परिवेश में कोरिया, चीन, मंचूरिया, भारत तथा सामान्य रूप से सारे सुदूर पूर्व को ला दिया गया। इस बात का उल्लेख किया गया कि उल्लेखित क्षेत्रों में अगर किसी विदेशी ताकत के द्वारा इनमें से किसी एक के हितों को नुकसान पहुंचाने की कोशिश की जाएगी तो दूसरा उसकी मदद करेगा। दोनों ने सम्भावित रूसी खतरे के विरुद्ध संधि का नवीनीकरण किया था। जापान को इस बात का खतरा था कि रूस उससे पराजय का प्रतिशोध लेने का प्रयास करेगा, तो दूसरी ओर इंगलैंड को इस बात की चिंता थी कि सुदूर पूर्व में परास्त होकर रूस पुनः भारत के सीमान्त क्षेत्रों में सक्रिय हो उठेगा। 1911 ई. में पुनः दस वर्षों के लिए आंग्ल-जापानी संधि का नवीनीकरण किया गया; यद्यपि रूस की पराजय के पश्चात् इंगलैंड को जापान की अधिक आवश्यकता थी, बनस्पति कि जापान को इंगलैंड की।

1907 में इंगलैंड ने रूस के साथ समझौता कर लिया। किन्तु, इसके बाद जर्मनी के बढ़ते हुए खतरे ने इंगलैंड के लिए आंग्ल-जापानी संधि को कायम रखना आवश्यक बना दिया। प्रथम विश्वयुद्ध में दोनों साथ-साथ लड़े। विश्वयुद्ध में जर्मनी की पराजय के पश्चात् इंगलैण्ड के लिए जर्मनी का खतरा भी टल गया। जल्द ही जापान स्वयं इंगलैंड के लिए एक खतरा बन गया। अतः 1921 में इंगलैण्ड ने अन्तिम रूप से इस संधि को दफना दिया।

Scanned with CamScanner